रात्रिक्लास 24.3.68 ओमशान्ति आत्माभिमानी हो?

बीती सो बीती देखो। आगे बढ़ते रहो। जो भी पुरुषार्थ करके पूरा करेंगे कहेंगे ड्रामा अनुसार। तुम्हारी बुद्धि में है हम कितने शुद्ध बन रहे हैं। यूं तो तुम्हारे जैसा पवित्र दुनियां में और कोई है नहीं। तुम इस समय ईश्वर के संतान हो। तो बहुत नशा रहता है। तुम नये विश्व के मालिक बनते हो। तुम बहुत रॉयल हो। तुम्हारे जितना रॉयल इस दुनियां में कोई है नहीं। डायरैक्ट बाप के बच्चे हो ना। अभी तुम जानते हो। बाप का वर्सा लिया था फिर बाप आये हैं वर्सा देने। खुशी दिमाग़ में रहती है हम बाप के बच्चे हैं। यह हरदम याद रहे तो बड़ी खुशी रहे। सबसे रॉयल बच्चे हो। एक बाप के बच्चे हो। अभी ब्रदर्सहुड तो कहते ही हैं। भाई–2। तो बाप से वर्से का हकदार सभी हैं। बाप के बने तो सदैव नशा चढ़ा हुआ रहना चाहिए। बच्चे जानते हैं हम पुरुषार्थ करेंगे ही कल्याण के लिए। रिज़ल्ट कल्याण के ही निकलते हैं। भल बाप से प्रतिज्ञा कर फिर भी अपवित्र बनते हैं तो अपने को ही घाटा डालते हैं। तुम व्यापारी हो। बाप को व्यापारी भी कहते हैं ना। सर्राफ भी कहते हैं। तो बच्चों को नशे में रहना चाहिए। तुम ब्राह्मण कुल के हो ना। याद रहना चाहिए। यह चक्र है ही बाजोली। यात्रा पर बाजोली खेलते जाते हैं। तुम्हारी बाजोली है रूहानी। यह सभी याद रहे हमें(हम) ब्राह्मण सो देवता बनते हैं। अथाह खुशी रहनी चाहिए।तुम जानते हो तुमको यहां जितनी खुशी है उतनी और कोई को नहीं। कॉन्ट्रास्ट कर ही नहीं सकते। बहुत फर्क है। कोई भी दिल में गन्दगी न होनी चाहिए। गाया जाता है सच्चे दिल पर साहब राज़ी। श्रीमत पर चलते हैं तो साहब भी देख कर खुश होते हैं। ऐसे सच्चे बाप को बहुत प्यार से याद करना चाहिए। अनुभव क्या बतावें। बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलता है। सच्च ही बोलते हैं। अन्दर कोई शैतानी नहीं है। इन्द्रप्रस्थ की कहानी है ना। समझना चाहिए हम किसके सामने बैठे हैं। हर हालत में उनकी मत पर ही चलनी है। बाप को याद करो तो कचड़ा निकल जाये। कोई–2 में तो बहुत कचड़ा होते हैं। फिर राजधानी में पद भी कम। पढ़ाई तो एक ही है ; परन्तु फर्क कितना। कोई राजा ,कोई रंक बनते हैं। सिर्फ वह है सुख की दुनियां, यह है दुःख की दुनियां। मत पर न चलते हैं तो कल्प, कल्पांतर का ऊँच पद गंवाये देते हैं। ऊँच पद पाने लिए ही पुरुषार्थ किया जाता है। बाप ने समझाया है काम चिक्षा पर बैठने से सांवरा बन गये हो। बाप गोरा बनाते हैं। रावण फिर काला बना देती है। शास्त्रों में तो लड़ाई आदि क्या–2 बातें लिख दी हैं। शास्त्र सभी हैं भक्तिमार्ग के। उन्हों का है ब्रह्म से योग। और ज्ञान भी है शास्त्रों का। शास्त्रों की अथॉरिटी है। भक्तिमार्ग और ज्ञानमार्ग में कितना फर्क है। तुम बच्चे भी पढ़ाई में नम्बरवार हो। यह है गॉड फादली स्प ीचुअल यूनिवर्सिटी। स्प्रीचुअल डालने से कब कोई मना नहीं करेंगे। स्प्रीचुअल यूनिवर्सिटी और कोई है नहीं। तुम लड़ सकते हो। कोई भी रोक न सकेंगे। इनकारपोरीयल वर्ल्ड स्प्रीचुअल यूनिवर्सिटी। स्प्रीचुअल नॉलज तो गॉड के बिगर और कोई पास तो है नहीं। आसुरी सम्प्रदाय और दैवी सम्प्रदाय में कितना फर्क है। वह है तमोप्रधान। सतोप्रधान होते ही हैं सतयुग में ; परन्तु मनुष्य अभी मानेंगे नहीं। बड़े–2 शेर पीछे आवेंगे। अभी नहीं। बाप है ही ग़रीब निवाज़। बाप को न जानने कारण कितनी गालियां देते हैं। ग्लानी करते हैं। तुम भी शामिल थे। निन्दा करते थे। अपकार करते थे। हम फिर उपकार करते हैं। यह है निष्काम सेवा। एक भी मनुष्य नहीं जो निष्काम सेवा कर सके। तुमको ताज वा तख़्त दे मैं वानप्रस्थ में चला जाता हूं। यह भी निष्काम हुई ना। निष्काम सेवा करने वाला एक बाप ही है। तुम हॉस्पिटल में डॉक्टरों, रोगियों को भी समझा सकते हो। हमारे पास ऐसी अविनाशी बूटी है तो 21 जन्म कब बीमार नहीं पड़ेंगे। यह वशीकरण देने से बहुतों का कल्याण हो सकता हैं। उनको ही सर्विस कहा जाता है। रोगी दुःखी होते हैं। बोलो हम ऐसा मंत्र देते हैं जो तुम जन्म–जन्मांतार के लिए निरोगी सदा सुखी बन जावेंगे। तुम हो कल्याणकारी। आधा कल्प लिए पदमपदपति बनते हो। अच्छा, गुडनाइट। ओमशान्ति।